**Notification no-540/2023** **Notification Date 23-06-2023**

**Student name SHAZIYA BEE**

**Supervisor nameDR. ANIL KUMAR**

**DEPARTMENT - HINDI**

Title **BISWIN SADI KE PRATHAM DO DASHKON KI HINDI KAHANIYON KE**

**ISTREE PAATRON KA ADHYAYAN**

## FINDING

बीसवीं सदी के प्रथम दो दशक की हिंदी कहानियाँ स्त्री दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। हिंदी कहानी आलोचना में शोधकर्ताओं व आलोचकों की स्त्री दृष्टि 1920 के अनंतर कहानियों पर केंद्रित रही है। 1900-1920 के काल की 10-12 कहानियों की चर्चा ही हिंदी कहानी की आलोचना व स्त्री पात्रों के रूप में की जाती है जबकि इस समयावधि में 80 से अधिक कहानियाँ प्रकाशित हुई। जिनमें स्त्री पात्र प्रमुखता से दृष्टिगोचर होते हैं। आलोच्य हिंदी कहानियों के स्त्री पात्रों का अध्ययन करने पर उनके स्पष्टतः दो रूप दिखाई देते हैं। परंपरागत स्त्रियाँ जो सामाजिक रूढ़ियों व कुरीतियों में जकड़ी हुई हैं और अपनी ही दुर्बलताओं में ग्रसित हैं। दूसरा, आधुनिक स्त्रियाँ जो परंपरागत समाज में रहकर अपने जीवन संघर्षों पर विजय पाती हैं। आलोच्य कहानियों में पारिवारिक तथा सामाजिक भूमिका पर स्त्री पात्रों का चित्रण हुआ है। पारिवारिक संबंधों के दायरे में बंधी माता, बहन, पत्नी, पुत्री, दादी-पोती, भाभी-ननद, सास-बहू, देवरानी-जेठानी आदि विविध परंपरागत स्त्री पात्रों के रूप में उभरते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। जबकि सामाजिक भूमिका में परंपरागत प्रथाओं द्वारा प्रताड़ित स्त्री विद्यमान है और कहानीकारों का रचनाकर्म स्त्री उद्धार की कामना से उद्वेलित है। आलोच्य कहानियों के स्त्री पात्र वैवाहिक समस्याओं व कुप्रथाओं यथा- वैधव्य जीवन, बंध्या जीवन, बाल-विवाह, अनमेल विवाह, बहु विवाह, दहेज प्रथा, सती प्रथा आदि के अंतर्गत सुधारवादी दृष्टि से चित्रित हैं। परंपरागत स्त्रियों में ममता, सेवा, त्याग, क्षमा, करूणा और संयम जैसे उच्च मानवीय गुणों के साथ ईर्ष्या, द्वेष, आभूषणप्रियता, रूढ़िवादिता, अंधविश्वास जैसी दुर्बलताएँ भी हैं जो तत्कालीन भारत की स्त्री जाति की समष्टिपरक समस्याओं व चरित्रगत विशेषताओं से मिलती हैं। कुछ कहानियों में स्त्री पात्रों का कोई नाम अंकित नही है। ये अनाम स्त्रियाँ पारिवारिक रिश्तों, जातिसूचक, तिरस्कारसूचक या आचरण के अनुसार संबोधित की गयी हैं और नामरहित

होना उनकी व्यक्तित्वहीनता का परिचायक है। आधुनिक युग के प्रभाववश आलोच्य कहानीकारों ने स्त्री स्वतंत्रता, स्त्री स्वावलंबन, स्त्री शिक्षा संबंधी सुधारवादी चेतना से युक्त बिंदुओं को उजागर किया है। आधुनिक स्त्री पात्रों का जीवन दर्शन बहुत ही परिवर्तित और क्रांतिकारी है उनमें विद्रोह की चेतना आ गयी है। ये स्त्री पात्र प्रगतिशील, स्पष्टवादिनी, स्वावलंबी, साहसी, बुद्धिमान, समाजसेविका, प्रतिशोधी एवं विद्रोही आदि आधुनिक रूपों में दृष्टिगोचर होते हैं। भाषा की दृष्टि से अधिकांश कहानियों में स्त्री पात्रों के संवाद आंचलिकता के साथ स्थानीय बोलियों से युक्त हैं। इनमें भोजपुरी, बुंदेली, मारवाड़ी, पंजाबी, देशज व ग्रामीण भाषा को प्रमुखता से देखा जा सकता है। हिंदी कहानियों का आरंभिक चरण होने से स्त्री पात्रों की भाषा में अपरिपक्वता एवं वाक्य विन्यास में शिथिलता तो दिखाई देती है। लेकिन इन कहानियों में प्रयुक्त भाषा का महत्व इसलिए अधिक है क्योंकि इनमें खड़ी-बोली के विकास के प्रारंभिक रूप के दर्शन होते हैं।